अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में जो देश भाग लेते हैं उनके बीच आकार, जनसंख्या, आन्तरिक उत्पादन, आन्तरिक मांग अथवा आवश्यकता, आर्थिक समृद्धि, क्रय शक्ति, आयात-निर्यात की आवश्यकता, क्षमता तथा मानसिकता की भिन्नता पायी जाती है । ये भिन्नताएं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रारुप को प्रभावित करती है । इस संदर्भ में विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार गुटों, विश्व व्यापार संगठन तथा संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन इत्यादि की भूमिका की अनदेखी नहीं की जा सकती है ।

यदि विकसित तथा विकासशील देशों के स्तर पर सामान्यीकृत दृष्टि से देखा जाये तो पाया जाता है कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में इन दोनों की भागीदारी के बीच चौड़ी खाई है । संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, डेनमार्क, बेल्जियम, जर्मनी, फ्रांस, ब्रिटेन, नीदरलैण्ड, नार्वे, स्वीडेन, स्विटजरलैण्ड, आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड, जिनकी प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय संयुक्त राज्य अमेरिका की अपेक्षा अधिक है, सहित 25 ऐसे देश हैं, जिनकी वर्ष 2000 में औसत प्रतिव्यक्ति आय 27,848 डॉलर थी । ये सभी आर्थिक सहयोग और विकास संगठन Organization for Economic Co-operation and Development (OECD) अथवा यूरोपीय समुदाय (European Community, EC) अथवा दोनो के सदस्य हैं । यद्यपि इनकी सम्मिलित जनसंख्या विश्व जनसंख्या का केवल 16.5 प्रतिशत (भारत की जनसंख्या से कम) है, विश्व के कुल निर्यात तथा आयात व्यापार में इनकी भागीदारी क्रमानुसार 64 तथा 67 प्रतिशत है । उल्लेखनीय है कि वर्ष 2000 में विश्व के कुल अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का मूल्य 12,90,100 मिलियन डॉलर था । इसके विपरीत विकासशील अथवा निम्न आय वर्ग के देश, जिनकी संयुक्त जनसंख्या विश्व के कुल जनसंख्या का 80 प्रतिशत से भी अधिक है की वर्ष 2000 में, विश्व के कुल निर्यात तथा आयात व्यापार में भागीदारी क्रम से के बल 32 तथा 29 प्रतिशत थी । इस वर्ग में मुख्य रुप से अफ्रीका, लैटिन अमेरिका (दक्षिणी अमेरिका) तथा एशिया महाद्वीपों के देश शामिल हैं । कुल विकसित देशों में से केवल पाँच-संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस तथा जापान की विश्व के कुल निर्यात तथा आयात व्यापार में भागीदारी बहुत ही अधिक है ।

सारणी–1

विश्व के आयात तथा निर्यात व्यापार में पाँच विकसित देशों की भागीदारी (मिलियन डॉलर, जर्मनी के संदर्भ में डी० एम० में) 1999

देशों का नाम	आयात	निर्यात
जर्मनी	8,53,077	9,84,065
जापान	4,19,358	3,11,246
फ्रांस	3,00,300	2,76,300
ग्रेट ब्रिटेन	22,632	26,913
सं. रा. अमेरिका	1,025	695

स्रोत : The Statements Year Book, 2004

यदि महाद्वीपीय स्तर पर सामान्यीकृत वृष्टि से देखा जाये तो पाया जाता है कि वर्ष 1999 में विश्व के कुल आयात-निर्यात व्यापार में यूरोपीय महाद्वीप का हिस्सा 50 प्रतिशत से अधिक था । उसी वर्ष संयुक्त राज्य अमेरिका की भागीदारी लगभग 20 प्रतिशत थी ।

6.2 विकसित तथा विकासशील देशों का निर्यात व्यापार (Export Trade Between Developed and Developing Countries)

खाद्यान्न, पेय पदार्थ, कृषि जन्य दूसरी वस्तुएँ, खनिज तथा अयस्क, तम्बाकू, चाय, कहवा, चमड़ा, और खालें इत्यादि ।

स्रोत देश : मॉरीशस, घाना, कोलम्बिया, श्री लंका, इक्वेडोर, भारत, मिस्र, पाकिस्तान, इण्डोनेशिया इत्यादि ।

गन्तव्य देश : अधिकांश विकसित देश ।

विकसित से विकासशील देशों की ओर जाने वाली वस्तुओं का नाम :

कारखानों में निर्मित वस्तुएँ भारी मशीनें, इन्जीनियरींग के सामान, सीमेंट, कागज, रसायन, ऊनी, तथा रेशमी वस्तु, मोटर गाड़िया और धात्विक पदार्थ (टिन, ताँबा, सीसा, जस्ता) इत्यादि ।

स्रोत देश : जर्मनी, ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस, इटली, जापान इत्यादि ।

गन्तव्य देश : मध्य-पूर्वी एशिया के देश, लैटिन अमेरिकी तथा अफ्रीकी देश ।

विश्व के प्रमुख देशों के निर्यात तथा आयात की वस्तुएँ :

वर्ष 2000 में विश्व के कुल निर्यात-आयात व्यापार में संयुक्त राज्य अमेरिका, पश्चिमी यूरोप के देश तथा जापान की संयुक्त भागीदारी लगभग 50 प्रतिशत थी ।

1. **जर्मनी का व्यापार**

निर्यात की वस्तुओं का नाम : अर्द्ध-निर्मित तथा पूर्ण निर्मित वस्तुएँ, रसायन, रंग, जीवित पशु, तम्बाकू, पेय पदार्थ, कच्चे माल

गन्तव्य देश : फ्रांस, नार्वे, इटली, संयुक्त राज्य अमेरिका, नीदरलैण्ड, जापान, ग्रेट ब्रिटेन, ऑस्ट्रिया ।

आयातित वस्तुओं का नाम : खाद्यान्न, कच्चे माल, शक्कर, लकड़िया, गेहूँ ।

स्त्रोत देश : फ्रांस, नीदरलैण्ड, इटली, वेल्जियम, लक्समेवर्ग, जापान, रुस, संयुक्त राज्य अमेरिका ।

2. **जापान का व्यापार**

निर्यात की वस्तुओं का नाम : विद्युत उपकरण, मशीनें, रसायन, कागज, सूती वस्त्र, नावें जथा जहाज, लोहा और इस्पात, मोटर गाड़ियाँ, कैमरा, सिलाई मशीन, रेडियो, वैज्ञानिक यंत्र तथा उपकरण ।

गन्तव्य देश : एशिया के देश, संयुक्त राज्य अमेरिका, अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, कनाडा, रुस, ऑस्ट्रेलिया, भारत ।

आयातित वस्तुओं का नाम : खाद्यान्न, कपास, जूट का सामान, कच्चा माल, खनिज, ईंधन, धातु, अयस्क, मशीनें, सूत, लोहा ।

स्रोत देश : एशिया के देश (चीन, भारत) संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, कनाडा, रुस ।

3. **ग्रेट ब्रिटेन का व्यापार**

निर्यात की वस्तुओं का नाम : निर्मित वस्तुएं, मशीनें, सूती वस्त्र, मशीनी औजार, ट्रैक्टर, यांत्रिक उपकरण, रसायन, जूट का सामान, यातायात के उपकरण ।

गन्तव्य देश : कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, भारत, जर्मनी, दक्षिण अफ्रीकी संघ, नीदरलैण्ड, अर्जेण्टाइना, मलेशिया, ब्राजील ।

4. **संयुक्त राज्य अमेरिका का व्यापार**

निर्यात की वस्तुओं का नाम : विद्युत मशीनें, औद्योगिक मशीनें, अनाज, रसायन, मोटर गाड़ियाँ, वायुयान, तकनीकी सामान, इस्पात की वस्तुएँ, परिधान, वैज्ञानिक उपकरण ।

गन्तवय देश : पश्चिमी यूरोप के देश, कनाडा, जापान, मध्य-पूर्व के देश, एशिया के दूसरे देश, लैटिन अमेरिकी देश ।

आयातित वस्तुओं का नाम : पेट्रोलियम, अलौह धातुएँ (तांबा, एलुमिनियम, निकेल, बॉक्साइट, टिन), अखवारी कागज, कागज की लुग्दी, परिधान, मशीनें, शराव, अनाज, कपास, कहवा, चाय ।

स्रोत देश : कनाडा, लैटिन अमेरिकी देश, ग्रेट ब्रिटेन, जापान, दक्षिणी अफ्रीकी संघ, रुस, पश्चिमी यूरोप के देश ।

5. **कनाडा का व्यापार**

निर्यात की वस्तुओं का नाम : गेंहूँ, लकड़ी, कागज की लुग्दी, कागज, मछलियाँ, निकेल, लौह अयस्क, तांवा, उर्वरक, रासायनिक एवं प्लास्टिक की वस्तुएँ, वनों की उपज, औद्योगिक पदार्थ, कृषि, यंत्र, अखबारी कागज, वायुयान, मोटर गाड़ियाँ, रसायन ।

गन्तव्य देश : संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, जापान, रुस, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, नीदरलैण्ड, चीन, फ्रांस ।

आयातित वस्तुओं का नाम : मशीनी उपकरण, मोटर गाड़ियाँ, औद्योगिक वस्तुएँ, धात्विक वस्तुएँ, रासायनिक तथा प्लास्टिक की वस्तुएँ, कृपि यंत्र ।

मैग्नीज

निर्यात–भारत, चीन. दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, ग्रेट ब्रिटेन, यूक्रेन इत्यादि ।

आयात–संयुक्त राज्य अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, जापान इत्यादि ।

पेट्रोलियम

निर्यात–सऊदी अरब (18), नार्वे (7), इरान (7), रुस (7), वेनेजुएला (6), संयुक्त अरब अमीरात (6), मेक्सिको (5), नाइजीरिया (5), ग्रेट ब्रिटेन (4), कुवैत (3), लिबिया (3), कनाडा (3), इण्डोनेशिया (2), मध्य एशिया के देश संयुक्त रुप से (43) ।

आयात–संयुक्त राज्य अमेरिका (23), जापान (18), चीन (8), दक्षिण कोरिया (7), जर्मनी (7), फ्रांस (5), इटली (5), पूर्वी यूरोप (5), नीदरलैण्ड (3), भारत (2), ग्रेट ब्रिटेन (2), कनाडा (2), (पश्चिमी यूरोप एक तिहाई)

6.3 सेवाओं का व्यापार (Trade of Service)

ऐसी चीज जो अमूर्त (Abstract) तथा अदृश्य (Invisible) हो, परन्तु बाजार में उनका मूल्य, निर्धारित होता है । उन्हे सेवा कहते हैं । 'द इकोनोमिस्ट' के अनुसार सेवाएं मूर्त तथा अदृश्य, जब कि वस्तुएं मूर्त तथा दृश्य होती हैं । वस्तुओं के ऐसा सेवाओं का भण्डारन (Storage) नहीं किया जा सकता है । जिस प्रकार वस्तुओं के व्यापार पर तट कर (Tariff) द्वारा नियंत्रण रखा जाता है, उसी प्रकार सेवाओं के व्यापार को घरेलू विधियों (Laws) द्वारा संरक्षण दिया जा सकता है । इस तुलनात्मक वक्तव्य से सेना एवं वस्तुओं का अन्तर सेवा का अर्थ स्पष्ट हो जाते हैं ।

विश्व व्यापार संगठन के तत्वावधान में हस्ताक्षरित तीन मुख्य समझौतों में सेवाओं के व्यापार पर आम समझौता एक है । इस समझौते के प्रभाव-क्षेत्र के अर्न्तगत बैंकिग, बीमा, सलाह (Counselling) इत्यादि के व्यापार आते हैं ।

ऐसा माना जाता है कि सेवा एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें भारत की महाशक्ति बनने की सम्भावनाएं छिपी हुई हैं । भारत के विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों की सहायता, प्रेरणा तथा अगुवाई में इस देश के दक्ष कार्य-कलाओं का परिश्रम अवश्य फल लाएगा । वर्तमान में ही 'कस्टाईज्ड' सॉफ्टवेयर के विश्व बाजार के लगभग पांचवें हिस्से भर भारत का आधिपत्य हो चुका है ।

इस देश की संशोधित आयत-निर्यात नीति ने सेवाओं के व्यापार को यथेष्ट महत्व देता है । विकास दर की वृद्धि-दर की वृष्टि भारत में निम्न सेवाएं अग्रणी रही हैं ।

लेखा-जोखा और सेवाएं, वस्तुपरक सेवाएं, कम्प्यूटर सेवाएं, डाटा प्रोसेसिंग और सॉफ्टवेयर इन्जीनियरिंग, सर्वेक्षण संबंधी तथा अन्य तकनीकी परामर्श, उपकरणों का रख-रखाव तथा मरम्मत, लाभ की सम्भावना संबंधी अध्ययन, स्वास्थय सेवाएं, विधि संबंधी परामर्श तथा सेवाएँ, तेल तथा गैस संबंधी सेवाएँ, प्रकाशन तथा मुद्रण, शैक्षिणिक सेवाएँ, विज्ञापन तथा 'प्रोमोशन' सेवाएं, दलाली सेवाएँ, डिजाइन सेवाएं, पर्यावरण संबंधी परामर्श तथा सेवाएँ, चलचित्र (फिल्म) उत्पादन, सुविधा मुहैया कराना, बीमा सेवाएँ, बाजार अनुसंधान परामर्श, शान्ति स्थापना संबंधी सेवाएँ, मनोरंजन सेवाएँ, शोध तथा विकास सहायता । लगभग इन सबों, कम से कम अधिकांश सेवाओं का निर्यात आरम्भ हो चुका है ।

इनमें से कई जैसे इन्जीनियरींग, कम्प्यूटर आधारित शोध तथा विकास, तकनीकी उपचार तथा विश्लेषण, मूल्यवद्धिति दूरसंचार, सड़कों तथा पुलों का निर्माण, अस्पतालों के उपकरण, होटल तथा अन्य आवास, सिनेमा तथा विडियो वितरण, ट्रैवेल्ट एजेंसी तथा दूर (बाहरी) तथा घरेलु वायु मार्ग परिवहन पर ध्यान केन्द्रीत किया जा रहा है ।